

तड़फत मछली नीर बिनु

डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली

मूल्य—एक रुपया

तत्वमसि तत्वमसि

- तंत्र के बारे में आप स्पष्ट करें प्रभु, इस बारे में बहुत गलतफहमियां हैं ?
- तंत्र कोई क्रिया नहीं है, कोई पद्धति या विवेचना नहीं है, अपितु तुम स्वयं नये तंत्र हो, मानव के शरीर को ही तंत्र कहा गया है, और तुम स्वयं नये तंत्र की उत्पत्ति करने में समर्थ हो ।
- जब माया और पुरुष, शिव और शक्ति का मिलन होता है, तो परस्पर आकर्षण-विकर्षण होता है, उसी का परिणाम तंत्र है ।
- तंत्र का तात्पर्य है, प्रकृति से सर्वथा नवीन रूप, नवीन पदार्थ, नवीन तत्व की रचना कर देना, एक ऐसी रचना जो कोई अन्य न कर सके, संसार में करोड़ों स्त्री-पुरुष हैं, और प्रत्येक परस्पर आकर्षण विकर्षण में रत होते हैं, पर जिस तत्व की, जिस प्रकार के प्राणी की तुमने रचना कर दी, आंख, नाक, कान, चेहरे का आकार लेकर जैसे तत्व की रचना तुमने कर दी, वैसा पृथ्वी पर दूसरा कोई कर ही नहीं सकता, न अभी तक कर सका है, और न भविष्य में कर सकेगा ।
- इसलिए तंत्र का तात्पर्य है, सृष्टि की नवीनता, नूतनता, सौन्दर्य, सजीवता, सप्राणता, व्यवस्था, व्यवस्थित क्रिया ।
- पर आकर्षण-विकर्षण का भी सहजीकरण नहीं है, इसकी भी एक अलग पद्धति है, एक अलग प्रकार की क्रिया है, और इस प्रकार की क्रिया पद्धति से ही राम का जन्म हो सकता है, कृष्ण की उत्पत्ति की जा सकती है, बुद्ध के स्वरूप का तंत्र निर्माण किया जा सकता है, महावीर की पृथ्वी पर रचना की जा सकती है ।
- क्योंकि यह गोपनीय और गंभीर क्रिया है, यह उन्मुक्त और स्वच्छन्द क्रिया है, गुरु के प्राण तत्वों के संयोजन से ही यह क्रिया आकाश में अंकित होती है, वायु के पंखों पर विचरण करती है, ब्रह्माण्ड में अवतरित होती है ।
- और यही क्रिया शिष्य के माध्यम से तंत्र के रूप में प्रादुर्भूत होती है ।

पूजा और पुजापा प्रभुवर ! इसी पुजारिन को समझो

- मैं आपको पूजा करना चाहती हूं गुरुवर ! आपको क्या भेंट चढ़ाऊं ?
- बाहिर से तो पत्थरों से निर्मित देवताओं की पूजा की जा सकती है, जीवित जाग्रत गुरु की पूजा तो हृदय में बिठा कर की जाती है, दिल के पवित्र आंगन में, प्रेम के सुन्दर सिंहासन पर बिठा कर मुस्कराहट के फूलों पर उन्हें बिठाया जाता है ।
- और हृदय के तारों की झनझनाहट से संगीत मुखरित किया जाता है, आंखों के दीप में स्नेह की बाती जला कर आरती उतारी जाती है ।
- प्रणय के घुंघुरू बांध कर रिंभाया जाता है, आनन्द की करधनी बजा कर उल्लसित किया जाता है, और लज्जा के भीने घूंघट से उसे निहारा जाता है ।
- दिल के स्वच्छ कागज पर प्रेम की लेखनी को आंसुओं की स्याही में डुबो कर प्रणय निवेदन करना पड़ता है, विशाल काले वालों की मेघ घटा की छाया तले विश्राम देना पड़ता है, और साधना के नूपुरों से नृत्य कर हमेशा-हमेशा के लिए मुस्कराहट की देह को चरणों में भेंट चढ़ा देनी पड़ती है ।
- गुलाब की डाली की तरह लचक कर जब गुरु के चरणों में समर्पित होओगी, तो वही पूजा है, वही ध्यान है, वही धूप है, अगरवत्ती है और आरती है ।
- और उन चरणों में डूब जाना, समर्पित हो जाना ही सम्पूर्ण पूजा एवं साधना है ।

यह मेरा वायदा है

● मैं आपके साथ हर समय हमेशा-हमेशा के लिए, रहना चाहता हूँ, क्या मैं सन्यास ले लूँ ?

- सन्यास का तात्पर्य है, मुक्त हो जाना, स्वच्छन्द हो जाना, सब कुछ छोड़ देना ।
- खाली भगवे कपड़े पहिनने से सन्यास नहीं हो सकता, पशुओं की तरह जंगलों में भटकने को सन्यास नहीं कहते, सूखे ठूँठ की तरह बैठे रहने की क्रिया को भी सन्यास नहीं कहते ।
- सन्यास का मतलब सब कुछ छोड़-छाड़ कर गुरु में विसर्जित हो जाने की क्रिया है, सन्यास का तात्पर्य है, अपने पास कुछ भी न बचा रहे, खुद का शरीर भी नहीं, मन भी नहीं, इच्छा भी नहीं, प्राण भी नहीं, सब कुछ समर्पण कर देने को सन्यास कहते हैं, जैसे बूँद समुद्र में एकाकार हो जाती है, इसी पद्धति को सन्यास कहते हैं ।
- मुझसे मिलना तुम्हारे जीवन का आवश्यक तत्व है, इसके बिना तुम अधूरे हो, अपूर्ण हो, विविध वासनाओं के दास बन कर मरघट की तरफ बढ़ रहे हो, इस मरघट तक की यात्रा के बीच श्रेष्ठ पड़ाव गुरु है, जहाँ से मृत्यु की तरफ नहीं, अमृत्यु की ओर रास्ता जाता है, जहाँ से हलाहल की ओर नहीं, अमृत की तरफ रास्ता जाता है, जहाँ से भय की ओर नहीं, निश्चिन्तता, निर्भीकता की ओर रास्ता जाता है ।
- और इसके लिये तुम्हें बहुत कुछ छोड़ना पड़ेगा, सन्यस्त होना पड़ेगा, पर पूर्ण रूप से नहीं, नित्य घण्टे दो घण्टे के लिए ही सन्यस्त हो जाइये, इतने समय तक ही गुरु में विसर्जित हो जाइये ।
- इतना ही बहुत है, मैं बीच रास्ते में ही तुम्हारी उंगली थाम लूँगा और अमृत्यु, अमृत, ब्रह्म तक तुम्हें पहुँचा दूँगा, यह मेरा वायदा है ।

हे री, मेरो दरद न जाणे कोय

● मैं गुरु को पूर्णता के साथ पा लेना चाहती हूँ, क्या करूँ ?

- तुमने पूर्णता शब्द का प्रयोग किया है, पूर्णता का तात्पर्य है समग्र रूप से, पूर्ण रूप से, देह से, प्राण से, वचन से, शब्द से और जीवन से ।
- पूर्णता का तात्पर्य है अपने पास कुछ भी बचा कर न रखना, सब कुछ सौंप देना और निश्चिन्त हो जाना, खाली घट की तरह रिक्त हो जाना, और सब कुछ पा लेना ।
- परमात्मा को पा लेना तो फिर भी आसान है, पर गुरु को पूर्णता से पा लेना अत्यन्त कठिन है, दुष्कर है, हिमालय की सर्वोच्च चोटी पर चढ़ने के समान है, आग के दरिया में से नंगे पाँव चल कर पार जाने के समान है ।
- यह सुगम रास्ता नहीं है, जिनके पाँव मजबूत होते हैं, वे ऐसा सोच सकते हैं, जिनकी आंखों में चिनगारी होती है, वे ऐसा निश्चय कर सकते हैं, जिनके हृदय में बगावत का ज्वालामुखी धधक रहा होता है, वे ऐसा कदम उठा सकते हैं, क्योंकि यह रास्ता नंगी तलवार पर चलने के समान है, जहाँ पैर लहुलुहान हो जाते हैं, पाँव खून से रंग जाते हैं, पर फिर भी चेहरे पर मुस्कराहट रहती है, आंखों में विजय का भाव होता है, जीवन के सागर में खुशी की लहरें उछालें मारती है ।
- और फिर तुम्हें रोका किसने है, सुगन्ध को फूल के इर्द-गिर्द लिपटने से कौन रोक सकता है, सूर्य की किरणों को पृथ्वी को चूमने से कौन वरज सकता है, वसन्त के गले में गलबाहें डालने से कलियों को कौन रोक सकता है, मेघों से बात चीत करने से मयूरी को कौन बांध सकता है, और मानसरोवर रूपी प्रियतम में पूरी तरह से डुबकी लगाने से हंसिनी को कौन वरज सकता है ।
- देर किस बात की है, पहले से ही बहुत देर हो चुकी है, ब्रह्म में पूर्ण लीन हो जाने, निश्चय करने, बढ़ने, वेग के साथ चलने और वासन्ती हवा की तरह लहराकर दौड़ने के लिए यही समय है, यही तो क्षण है, अब चूक गये, तो फिर उमर भर के लिए चूक ही गये ।

कल न पड़त, पल-पल मग जोवत

- मैं तो आपकी राह देखते-देखते थक गई हूं गुरुवर ! क्या आप इतने निष्ठुर हैं ?
- राह देखने के लिए ही होती है, जिनके जीवन का सौभाग्य होता है, उसी की आंखों में कोई बसता है, उसी के नयनों में इन्तजार के अक्षर लिखे होते हैं, उसी को विरह की सौगात मिलती है, और यह सौगात मूल्यवान है, जिसे दिल के हजार-हजार पदों के बीच छिपा कर रखना पड़ता है।
- विरह तो जीवन का सौभाग्य है, मन की मस्ती है, आनन्द की हिलोर है, दिल का उछाह है, जो प्रत्येक के नसीब में नहीं होता, जो घिसी-पिटी जिन्दगी व्यतीत करना चाहते हैं, वे इस शब्द का अर्थ नहीं समझ सकते, जो कायर और बुझदिल होते हैं, वे इस शब्द से कोसों दूर भागते हैं, जो गुलामों की तरह जिन्दगी जीने के आदी हो चुके होते हैं, उन्हें विरह की यह सौगात प्राप्त नहीं होती।
- मिलन तो एक क्षण का सुख है, मिला, और सब कुछ एक क्षण में समाप्त हो गया, पर विरह तो पूरा का पूरा महाकाव्य है, जिन्दगी का विशाल ग्रन्थ है, जिसके एक-एक पन्ने पर मधुर स्मृतियों के अक्षर अंकित होते हैं, विरह तो वासन्ती बयार है, जिसके रेशे-रेशे में खुशबू का एहसास लिखा होता है, विरह तो प्रणय की अनलिखी कहानी है, जो रामायण से भी श्रेष्ठ और गीता से भी ज्यादा पवित्र है।
- क्योंकि संसार में मिलन तो क्षण भंगुर होता है, अमर तो विरह होता है, हजारों-लाखों ग्रन्थ विरह पर लिखे हैं, सूर, रैदास, कबीर, मीरा के एक-एक शब्द में तड़फ है, विरह की सिसकारी है, वियोग की उच्छ्वास है, तभी तो वह महान हैं, तभी तो वह अद्वितीय हैं।
- यह निष्ठुरता नहीं विरह की परीक्षा है, तुम्हारे हृदय की गहराई का मापदण्ड है, तुम्हारी पथराई हुई आंखों की परिभाषा है, तुम्हारे प्रांसुओं से लिखा प्रणय ग्रन्थ है।
- और अगर यह सब कुछ है, तो मैं तुम्हें बधाई देता हूं, कि तुम पूर्णता के निकट अत्यन्त सन्निकट हो।

प्रेम को पंथ कठोर कराल, तलवार की धार पे धावनो है

- क्या मैं प्रेम के बारे में कुछ जान सकता हूं आपसे ?
- तुम किसी के बारे में कुछ भी जान सकते हो, क्योंकि तुम मेरे आत्मीय हो, और उसे सब कुछ प्राप्त करने का अधिकार होता है।
- मगर इसके लिए निकट जाना होता है, शिष्य बनना पड़ता है, उपनिषद होने की क्रिया अपनानी पड़ती है, और नजदीक जाते जाते उसमें समा जाना पड़ता है, एक छटा बन जाता है, एक लयता हो जाती है, इसी को डूबना कहते हैं, इसी को समर्पण कहते हैं, इसी को शिष्यता कहते हैं।
- और अगर मेरा शिष्य है, और उसमें प्रेम तत्व नहीं है, तो वह मेरा शिष्य हो ही नहीं सकता, मेरा तो पूरा जीवन प्रेम का मानसरोवर है, इसमें से जो भी नदियां निकलेंगी, जो भी जलधाराएं फटेंगी, वे प्रेम की ही होंगी, क्योंकि मेरी दृष्टि में प्रेम और शिष्य दोनों एक ही अर्थ के परस्पर पूरक हैं।
- पर प्रेम देह तक ही सीमित न हो, प्रेम में वासना की दुर्गन्ध न हो, प्रेम में क्षुद्रता और ओछेपन की सड़ांध न हो, प्रेम में स्वार्थ और गरूर का मटमैलापन न हो, प्रेम तो मधुर, कलकल, छलछल बहती हुई नदी की धारा है, जिसकी प्रत्येक तरंग प्रेम का ही गीत गाती है, प्रेम तो वासन्ती बहार है, जिसके रेशे-रेशे में प्रेम की धीमी मादक सुगन्ध है, प्रेम तो बांस की स्नेहिल बांसुरी है, जिसमें मधुरता के स्वर ही उच्चरित होते हैं, प्रेम तो कोयल की कुहक है, जो मन प्राण को अपने संगीत से सराबोर कर देती है।
- क्योंकि प्रेम तो मानवता की पायल है, जिसके खनकने से माधुर्यता फिजा में तैर जाती है, वह तो शंख की मधुर ध्वनि है, जो देवताओं के चरणों में अर्पित होती है, प्रेम तो देह की सजी हुई थाली है, जो गुरु चरणों में समर्पित होती है, लीन हो जाती है, विसर्जित होती है।
- अगर प्रेम नहीं है, तो पूजा नहीं है, बिना प्रेम के मन्दिर श्मशान की तरह शून्य है, बिना प्रेम के देवता पाषाण की निर्जीव मूर्तियां हैं, बिना प्रेम के अर्चन-पूजन ईश्वर का अपमान करना है, गुरु का निरादर करना है।
- और मेरी एक आवाज है, एक ही शब्द है, एक ही मन्त्र है, एक ही सन्देश है, कि तुम प्रेममय बनो, प्रेम सिक्त बनो, सम्पूर्ण अर्थों में प्रेम ही बन जाओ यही तो ब्रह्म से साक्षात्कार है।

काल के भाल पर आंसुओं का राज-तिलक

● जब से मैं आपसे बिछुड़ी हूँ आंसू थमते ही नहीं, रोकने की कोशिश भी करती हूँ पर फिर भी रुलाई फूट पड़ती है और आंसू छलछला आते हैं।

- तुम पागल हो, इनको रोकने की कोशिश करती ही क्यों हो, इनको तो उन्मुक्त भाव से बहने दो, निर्वन्द निर्बाध गति से गतिशील होने दो, इनके बीच में अवरोध पैदा करना प्रभु-मिलन के मार्ग में रुकावट डालना है।
- आंसू जीवन्तता के परिचायक हैं, वृद्ध लोगों की आंखों में आंसू नहीं आते, क्योंकि उनकी आंखें सूख जाती हैं, क्योंकि उनका हृदय रस रिक्त हो चुका होता है, क्योंकि उनके जीवन की पूंजी समाप्त हो चुकी होती है।
- और आंसू न आना अपूर्णता का सूचक है, इस बात का द्यौतक है, कि यह जीवन की लड़ाई हार चुका है, यह जीवन के मधुर रस से रिक्त हो चुका है, यह प्रसन्नता के खजाने से शून्य होकर निर्धन हो चुका है।
- क्योंकि आंसू जीवन की प्रणय-गाथा है, ब्रह्म तक पहुँचने की पगडंडी आंसुओं से ही निर्मित होती है, जीवन का इतिहास आंसुओं के छन्दों से ही लिखा जाता है, विरह के गीत आंसुओं के पन्नों पर ही अंकित होते हैं, प्रेम का पौधा आंसुओं के जल से ही सींचा जाता है।
- इसके लिए तो तुम्हें अपने तकदीर की सराहना करनी चाहिए, कि आंसुओं के छन्दों से तुम गीत गा सकती हो, अश्रुओं की पंक्तियों से विरह व्यथा को स्पष्ट कर सकती हो, बड़े-बड़े मोतियों से हृदय को सजा कर उस पर गुरु को बिठा सकती हो, निर्मल छलछलाती हुई आंसुओं की धारा में स्नान कर पवित्र हो सकती हो, और प्राणों के साथ समर्पित हो कर ब्रह्म में लीन हो सकती हो।
- इसलिए इन आंसुओं को रोकने की कोशिश मत कर, इन्हें तो छल-छलाती हुई नदी की तरह बहने दे यही तो पूर्णता है।